हिरण्यगर्भ (प्रजापति) देवता का परिचय

डा० धनञ्जय वासुदेव द्विवेदी

सहायक प्रोफेसर, संस्कृत विभाग,

डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, राँची

ऋग्वैदिक देवताओं के स्वरूप का अध्ययन करने से यह स्पष्ट हो जाता है कि ऋग्वेद में एक परम सत्ता की स्तुति विविध नामों से की गयी है। ऐसा इसलिए कि सभी देवताओं की स्तुति में गुण-साम्य दृष्टिगत होता है। हिरण्यगर्भ का स्वरूप भी इस तथ्य का अपवाद नहीं कहा जा सकता। हिरण्यगर्भ को प्रजापति भी कहा गया है। पुराणों में इसी को ब्रह्मा कहा गया है। सृष्टि के आदि में सबसे पहले हिरण्यगर्भ की स्तुति हुई थी। यह उत्पन्न हुई सम्पूर्ण सृष्टि का स्वामी था। उसने इस पथिवी और द्युलोक को धारण किया हुआ था और अपने तेज से अन्तरिक्ष में टिका हुआ था।

प्रजापति का आविर्भाव– युगान्त काल में सम्पूर्ण सृष्टि को महान् जलराशि आवृत कर लेती है। उसी से देवताओं के स्वरूप तथा बीज रूप में स्थित हिरण्यगर्भ (प्रजापति) नूतन-सृष्टि-सम्पादनार्थ अविर्भूत होता है। प्रजापति द्वारा सृष्टि की उत्पत्ति प्रजापति ने अपनी महिमा से सर्वत्र व्याप्त जल को इस योग्य बना दिया कि वह जल सृष्टि रूप में वर्तमान प्रजापति को गर्भ के रूप में धारण कर सके तथा सृष्टि उत्पन्न करने में समर्थ अग्नि को उत्पन्न करे। सृष्टि की समुत्पादिका जलराशि को भी उत्पन्न करने वाला प्रजापति ही है। वह जड़, चेतन-सबका उत्पादक है। वह आत्मदा, बलदा भी है। जड़, चेतन-उभयविध जगत् के आधारभूत लोकों को निर्मित करने का कार्य भी प्रजापति ही करता है। उसी ने पृथिवी एवं लोक को भी निर्मित किया है।

प्रजापति का व्यापकत्व एवं आधिपत्य– प्रजापति ही सम्पूर्ण सृष्टि को धारण करके उसमें व्याप्त है। वर्तमान जगत् तथा भूत जगत् को प्रजापति ने ही व्याप्त कर रखा है। सूर्य को भी धारण करने वाला प्रजापति ही है। उसी को आधार बनाकर सूर्य उदित होता है तथा प्रकाशित होता है। वह सभी द्विपद एवं चतुष्पद् जीवों का शासक है। प्राणियों के जन्म और मृत्यु उसी के अधिकार में हैं। उसके प्रभाव से

द्युलोक एवं पृथिवी लोक के स्वामी काँपते रहते हैं। विभिन्न दिशाओं-उपदिशाओं पर भी उसका आधिपत्य है।

प्रजापति की पूजनीयता– वैदिक ऋषि अपने उपास्य देव की पूजा करते हुए नहीं अघाता है। वह अपने सभी कार्यों की सिद्धि के लिए अपने उपास्य देव का आवाहन करता है। प्रजापति का आवाहन करते हुए ऋषि कहता है कि हे सत्य-धर्मा प्रजापति, तुमने पृथ्वी तथा द्युलोक को उत्पन्न किया है, तथा आह्लादकारी चन्द्रमा एवं विस्तृत जलराशि को उत्पन्न किया है, अतः हमें पीड़ित मत करो। हे प्रजापति! तुमसे अतिरिक्त दूसरे किसी ने भी इस सम्पूर्ण उत्पन्न पदार्थों को व्याप्त नहीं किया है। मैं जिस किसी इच्छा से तुम्हें हविष् प्रदान करूँ, वे हमारी इच्छाएँ पूर्ण हों तथा हम धनों के स्वामी बन जायें।

प्रजापति का 'क' अभिधान- एक बार इन्द्र ने प्रजापति से अपने लिए उनके महत्त्व की याचना की। इस पर प्रजापति ने इन्द्र से कहा कि मैं अपना महत्त्व तुम्हें प्रदान करके स्वयं क्या बनूँगा (अर्थात् कः स्याम्)। इन्द्र ने उत्तर दिया कि जो कुछ तुम कह रहे हो वही अर्थात् (कः) बन जाओ। इस प्रकार प्रजापति का नाम 'कः' पड़ गया।